पर्वत प्रदेश में पावस

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2016
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

पर्वत अपना प्रतिबिंब तालाब में क्यों देख रहा है?

Answer:

पावस ऋतु के आने पर पर्वत का सौंदर्य द्विगुणित हो गया है। उस पर सहस्त्रों पुष्प खिल उठे हैं। पर्वत तो मानो स्वयं के सौंदर्य पर मुग्ध हो गए हैं। वे अपने चरणों में बहने वाले तालाब में अपना प्रतिबिंब निहार रहे हैं क्योंकि तालाब दर्पण की भाँति निर्मल और पारदर्शी है। तालाब के स्वच्छ जल में पर्वत को स्वयं का प्रतिबिंब स्पष्ट दृष्टिगत हो रहा है। वह स्वयं पर प्रफुल्लित कुसुमों को तालाब में निहार कर प्रसन्न हो रहा है।

2015
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 2.

पावस ऋतु में पर्वत प्रदेश का रूप क्यों परिवर्तित हो जाता है?

Answer:

पावस ऋतु (वर्षा ऋतु) में पर्वतीय प्रदेश की प्रकृति प्रतिपल अपना नया वेश ग्रहण करती दिखाई देती है। क्षण में बादलों का घिरना, वर्षा होना तथा पुनः वातावरण का साफ स्वच्छ हो धूप खिलना, पर्वतों पर आम घटना है। अत्यधिक ऊँचाई के कारण मौसम का परिवर्तन वहाँ एक सामान्य क्रिया है जो वर्षा ऋतु में और अधिक तीव्रता से होता है।

2014
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 3.

'पर्वत प्रदेश में पावस' के आधार पर 'है टूट पड़ा भू पर अंबर' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'भू पर अंबर के टूटने' का अर्थ है– बादलों द्वारा धरती पर आक्रमण करना अर्थात् मूसलाधार वर्षा होना। पर्वतीय अंचल में अचानक बादलों के घिरने से पर्वत अदृश्य हो गए; केवल झरनों का शोर शेष रह गया है। पृथ्वी और आकाश एक हो गए, ऐसे में अचानक तेज़ वर्षा का होना कवि को लगता है मानो भू पर अंबर टूट पड़ा है।

निबंधात्मक परस

Question 4.

पर्वत प्रदेश में वर्षा ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है, परंतु पहाड़ों पर रहने वाले लोगों के दैनिक जीवन में क्या कठिनाइयाँ उत्पन्न होती होंगी? उनके विषय में लिखिए।

Answer:

पर्वत प्रदेश में वर्षा ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है। वहाँ क्षण-क्षण प्रकृति अपना वेश बदलती-सी नज़र आती है। कभी धूप चमकती नज़र आती है, कभी सूर्य बादलों की ओट में छिप जाता है, कभी प्रकृति का सुहावना रंग दिखाई देता है, तो कभी इतने घने बादल छा जाते हैं कि पर्वत तक अदृश्य हो जाते हैं। मात्र झरनों का शोर सुनाई देता रहता है। अचानक घनघोर वर्षा होने लगती है। निःसंदेह पर्वतों की प्रकृति के ये बदलते दृश्य सुहावने तो लगते हैं। पर्यटकों को आकर्षित भी करते हैं, परंतु पहाड़ों पर रहने वाले लोगों के लिए यह मौसम कठिनाइयों का कारण भी बन जाता है। वर्षा ऋतु में बादलों का फटना, चट्टानों का खिसकना बर्फीले तूफानों का आना एक आम समस्या है, जिसमें गाँव-के-गाँव तबाह हो जाते हैं। फिसलन भरे रास्तों के कारण यातायात व्यवस्था ठप्प पड़ जाती है जिससे रोजमर्रा के लिए आवश्यक सामग्री तक उचित समय पर नहीं पहुँच पाती। चिकित्सा-सुविधाएँ न पहुँचना, संचार व्यवस्था का ठप्प होना, सड़कों का टूटना, ऐसी अनेक समस्याएँ हैं। जिनका सामना इन पर्वतीय अंचल में रहने वाले लोगों को करना पड़ता है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न
2013

Question 5.

कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता प्रकृति के परिवर्तन पर प्रकाश डालती है। प्रकृति पल-पल अपना रूप बदलती है। यहाँ प्रकृति के सुंदरतम् रूप का वर्णन भी किया गया है और उसके भयानक रूप का भी चित्रण किया गया है। इस कविता की सार्थकता यह है कि हम ईश्वर द्वारा प्रदत्त प्रकृति को सँभालकर रखें, इसे प्रदूषित नहीं होने दें, अन्यथा इसका विनाश हो जाएगा और हमारा जीवन भी खतरे में पड़ जाएगा।

2012

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 6.

पर्वत प्रदेश में पावस' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

Answer:

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता का प्रतिपाद्य इस प्रकार है कि इस कविता के रचयिता सुमित्रानंदन पंत जी हैं। इन्होंने पर्वतीय स्थल का दृश्य इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि मानों कोई अपनी आँखों से पर्वतों के पास बैठकर देख रहा हो। वर्षा ऋतु में पर्वतीय क्षेत्र में अनेक परिवर्तित दृश्य देखने को मिलत हैं। पर्वतों को तलहटी में स्थिति निर्मल जल से भरे तालाब में पर्वतों की शृंखलाएँ और उनकी बर्फ़ से ढकी व कुछ काले, भूरे, सफ़ेद, बादलों से ढकी चोटियाँ एकदम साफ़ दिखाई देती हैं। जो दर्पण के समान तालाब-सा लगता है। गिरते हुए झरनों की ध्वनियाँ मदमस्त करतीं हैं और पानी की बूँदे मिलकर एक मोतियों की माला-सी दिखाई देती हैं। पर्वतों पर उगे हुए ऊँचे-ऊँचे पेड़ ऐसे दिखाई देते हैं कि वे कुछ आकाश की ओर देख रहें हैं और कुछ चिंता करते हुए झुक गए हैं।

बादल आए घनघोर वर्षा करके न जाने कहाँ चले गए। घनघोर वर्षा में केवल झरने की आवाज़ सुनाई देती है। इस घनघोर वर्षा के कारण ऊँचे-ऊँचे शाल के पेड़ दिखाई नहीं देते हैं। चारों तरफ़ धूआँ-सा छाया हुआ है कि मानों तालाब से भाप उठ रही हो। पर्वत क्षेत्र में यह सब बदलते दृश्यों को देखकर ऐसा मालूम पड़ता है कि मानों इंद्रजाल हो।

2011

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 7.

वर्षाऋतु में इंद्र की जादूगरी के दो उदाहरण दीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

पर्वतीय प्रदेश में पावस ऋतु में पल-पल परिवर्तित अलौकिक दृश्य इंद्र देव की ही जादूगरी है। बादल इतने नीचे आ जाते हैं कि पर्वत को भी ढाँप लेते हैं तथा ज़ोर से बिजली कड़कने के साथ मूसलाधार वर्षा होने लगती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो पर्वत पंख लगा कर उड़ गए हों। जब आकाश में मेघ घिर आते हैं तब घनघोर वर्षा के कारण लगता है कि धरती पर आकाश टूट पड़ा है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 8.

'पर्वत प्रदेश में पावस' का केंद्रीय भाव लगभग बीस शब्दों में लिखो।

Answer:

इस कविता में कवि ने वर्षा ऋतु में पर्वतीय प्रदेश के पल-पल परिवर्तित होने वाले रूप-सौंदर्य का यथार्थ व सुन्दर वर्णन किया है। बादल के आते ही वहाँ दृश्य अपना रूप पल-पल बदलता है।

2010
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 9.

"पर्वत प्रदेश में पावस" कविता के आधार पर लिखिए कि पर्वतीय क्षेत्रों में पावस ऋतु में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं।

Answer:

वर्षा ऋतु में पर्वतीय प्रदेश में प्रकृति प्रतिपल नया वेश ग्रहण करती दिखाई दे रही है। चारों ओर मेखलाकार पर्वत हैं। उन पर सहस्रों फूल खिले हुए हैं। पर्वत के नीचे तालाब है जिसमें पर्वत का प्रतिबिंब दिखाई दे रहा है। पर्वत पर उगे हज़ारों पुष्प पर्वत के हज़ारों नेत्रों के समान हैं। पर्वत पर उगे शाल वृक्ष एकटक आकाश की ओर देखते हुए कुछ चिंतित व उदास लग रहे हैं। देखते-ही-देखते प्रकृति अपना रूप बदलती है। चारों ओर घनघोर काली घटाएँ छा जाती हैं। बादलों की सघनता के कारण पर्वत व झरने अदृश्य हो जाते हैं। केवल झरनों का स्वर ही सुनाई पड़ता है। तेज़ वर्षा के आरंभ होने पर ऐसा लगता है कि आकाश धरती पर टूट पड़ा है और शाल के वृक्ष भी भयभीत होकर धरती में धँस गए हैं। बादल, तालाब से उठने वाले धुएँ का आभास दे रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि तालाब में आग लग गई है। पल-पल बदलते जादुई दृश्य को देखकर लगता है कि इंद्र बादल रूपी वाहन में बैठकर अपना जादू का खेल दिखा रहा हो।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 10.

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में तालाब की समानता किसके साथ की गई है? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने तालाब की समानता दर्पण के साथ दिखाई है। तालाब का जल अत्यंत स्वच्छ एवं निर्मल है। वह प्रतिबिंब दिखाने में सक्षम है। दर्पण और तालाब दोनों ही पारदर्शी हैं। दर्पण की भाँति तालाब में भी पर्वत और उस पर उगे सहस्रो पुष्पों का प्रतिबिंब स्पष्ट दिखाई दे रहा था इसलिए कवि द्वारा तालाब की समानता दर्पण के साथ करना अत्यंत सटीक है।

2009
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 11.

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में झरने पर्वत का गौरव-गान कैसे करते हैं?

Answer:

"पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के अनुसार पर्वतों से झरने निरंतर बहते रहते हैं, जिनमें निर्मल और शीतल पानी होता है। गिरते हुए झरनों की ध्वनि बड़ी मनमोहक होती है। ऐसा मालूम पड़ता है कि झरने पर्वतों का गौरव-गान करने के उद्देश्य से कोई मधुर गीत गा रहे हो। उनके पर्वतों से गिरने में एक जैसा स्वर और ताल व लय होती है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 12.

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

उड़ गया, अचानक लो, भूधर
फड़का अपार पारद के पर!
रव-शेष रह गए हैं निर्झर!
है टूट पड़ा भू पर अंबर!
धँस गए धरा में सभय शाल!
उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!
यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए।
(ख) शाल-वृक्षों के डरने का कारण स्पष्ट कीजिए।
(ग) कवि ने "रव-शेष रह गए हैं निर्झर" क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।
(घ) इंद्र जादूगरी का खेल कैसे खेल रहा है?

Answer:

(क) कवि का नाम–सुमित्रानंदन पंत
कविता का नाम– पर्वत प्रदेश में पावस।

(ख) पर्वतीय प्रदेश में चारों ओर काले-काले घने बादलों के छा जाने और मूसलाधार वर्षा होने से पर्वत, झरने, शाल के वृक्ष और आकाश आदि कुद भी दिखाई नहीं देते हैं, जिससे ऐसा मालूम पड़ता है कि आसमान धरती पर टूट पड़ा हो। इस घटना से डरकर ही शाल वृक्ष धरती में धँस गए हैं।

(ग) "रव-शेष रह गए हैं निर्झर" यह कथन कवि ने इसलिए कहा है कि चारों तरफ़ बादलों के छा जाने से तथा वर्षा होने से कुछ भी दिखाई नहीं देता है, केवल झरनों की आवाज़ ही सुनाई देती है।

(घ) आसमान में चारों तरफ़ घटाएँ घिर आई हैं। कुछ काली हैं। और कुछ भूरी हैं। कुछ घटाएँ आपस में मिलकर घनघोर वर्षा कर रही हैं, तो कुछ घटाएँ आपस में टकराकर बिजली की कड़क और दमक पैदा कर रही हैं। इन सबको देखकर ऐसा मालूम पड़ता है कि इंद्र देवता बादल रूपी यान में बैठकर, इधर-उधर घूमकर अपनी जादूगरी का खेल दिखा रहें हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in